✪ लंगर (सतिगुर धार : सतिजुग धार : धर्म धार) ✪

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

नारद कहे जन भगतो की तुहाढ्ढा इक्को पिउ दादा, यद इक्को इक्क सुहाईआ। की तुहाढ्ढा मेल सीता राम किशन राधा, निव निव लागे पाईआ। किस डोर नाल चोर हो के तुहानूं बांधा, बंधन आपणा रिहा पाईआ। तुहानूं माण दित्ता वद्ध सन्तन साधा, सति आपणा रंग रंगाईआ। पर याद कर लउ आपणे अंदरों कढ्ढु दिउ हउमे वाली आगा, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। वेखो खेल कन्त सुहागा, की करनी कार कमाईआ। याद रक्खणा हाढ़ सतारां सभ ने इक्को पंगत विच्च बह के खाणा प्रशादा, वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ। हत्थां उत्ते उस दा लैणा स्वादा, बरतन जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। अंदर प्रेम दा होवे लाडा, मुहब्बत विच्च तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। तुहाढ्ढे अन्तश्करन विच्च होवे वाधा, मनसा मन दी मन विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

नारद कहे सभ ने प्यार विच्च जाणा टिक, आपणा आसण लाईआ। पंगत बहेगी गुरसिख इक्क सौ इक्क, जीरो इक्क नाल वडयाईआ। सभ दे हत्थां उत्ते पूरन नाम दी पहलों रक्खी जाएगी चिट, ख़ाली नज़र कोई ना आईआ। फेर हत्थ लाएगा उत्ते तुहाढ्ढी पिढ्ढ, पुशत पुनांह आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

नारद कहे **सतिगुर धार** दा लंगर वरते, खुशीआं नाल वरताईआ। निमस्कार करे धरती धरते, धवल सीस झुकाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू करन चरचे, चारों कुण्ट मता पकाईआ। सानूं लालच दित्ता दीनां मज़हबां विच्च रहे परचे, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। छोटे छोटे नाम दे दे के खरचे, जगत रहबर दित्ता दृढ़ाईआ। साथों लथ्थे मूल ना कर्ज़े, मकरूज़ हो के वेखीए थाउँ थाईंआ। अन्त इक्क अरदास बेनन्ती अरज़े, आरज़ू इक्क सुणाईआ। प्रभू जे तेरा भगत थोड़ा जिहा समां होर ज़र जाए, फेर जग्ग जग्ग तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। तेरा दरस कीत्यां दीन दुनी सभ तर जाए, माला मणके दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दी याद विच्च कोटन कोट याद करदे मर गए, मृगशाला देण दुहाईआ। कई धूणीआं उत्ते सड़

गए, खल्लां खल्ल लुहाईआ। कई सिर कदमां उत्ते धर गए, निउँ निउँ लागण पाईंआ। पर मैं हैरान हो गिआ कई तेरे भगत तेरे हुक्म अग्गे अड़ गए, अड़िक्का तेरे प्रेम वाला जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ।

नारद कहे जन भगतो तुहाढ्ढा की इरादा, मन मनसा दिउ जणाईआ। सच दस्सयो तत्त गुरू मन्नणा कि शब्द गुरू वाला बाजा, जो बाजी दो जहान आपणे हत्थ रखवाईआ। जिस ने लहणा देणा पूरा करना तख्त ताजा, तख्त निवासी जग फ़ासी दए कटाईआ। ग़रीब निमाणयां रक्खे लाजा, कोझयां कमलयां सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। हँस बणाए कागा, सोहँ धुर दी चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

हाढ़ कहे जन भगतो मेरा प्रविष्टा पहला, पहली वालयो तुहानूं अख़ीर दी लोड़ रहे ना राईआ। तुसां जाणा उस प्रभू दिआं विच्च महलां, जिस महल नूं सचखण्ड कह के सारे गाईआ। मैं वी उस दे दवारे उत्ते टहिला, बिनां कदमां चलां चाईं चाईंआ। पर याद कर लउ, तुहानूं मार्ग मिल गिआ सहला, कोटन कोट मर मर के आपणा आप गए गवाईआ। उह वेखो राए धर्म सभ दे लेखे दा चुक्की फिरदा थैला, गुरमुखां नूं निउँ निउँ सीस निवाईआ। राए धर्म कहे मेरी रही कोई ना जेहला, चुरासी बंधन ना कोई भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

(१ हाढ़ शहनशाही सम्मत ८)

✪ ✪ ✪ ✪

हाढ़ कहे मेरा लेखा इक्क हकीकी, हुक्मां तों बाहर जणाईआ। मेरा मालक लाशरीकी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दे विच्च हक़ तौफीकी, ताकतवर बेपरवाहीआ। उस ने बदल दिती नीती, नीतीवान वेख वखाईआ। वेखो कलिजुग धार रही चीकी, चीक चिहाढ़ा रही पाईआ। मेरी प्रेम धार होणी फीकी, रस अगम्म ना कोई चुआईआ। सृष्टी जाए मूल ना जीती, मैं रो रो के दिआं दुहाईआ। इक्को प्रभू दी सच प्रीती, जो प्रीतम हो के वेख विखाईआ। जन भगतो पिछली याद ना करयो बीती, अग्गे अगला कदम उठाईआ। सभ ने बदल लैणी नीती, नीतीवान वेख वखाईआ। तुहाढ्ढी प्रफुल्लत होवे निक्की, जिही बग़ीची, बाग़ धुर दा दए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

सतारां हाढ़ कहे जन भगतो मैं सभ नूं देवां वधाई, वाधा प्रभ दे नाल वधाईआ। जिस ने दित्ती जगत वड्डिआई, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। काया रंग रिहा चढ़ाई, दूसर संग ना कोई बणाईआ। अन्तर परदा रिहा उठाई, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म ने बदल देणी शाही, शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। चारों कुण्ट तक्कणी दुहाई, दोहरी धर्म दी

धार प्रगटाईआ। जिस तुहाढ्ढी कूड़ दी मेटणी शाही, शहनशाह आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

हाढ़ कहे मैं तुहानूं दस्सां तुहाढ्ढी बीती, बिन परदा परदा चुकाईआ । तुहाढ्ढे अंदर आवे सति दी रीती, रीतीवान वेख वखाईआ। तुहाढ्ढी आत्मा रहे अतीती, त्रैगुण विच्च ना कोई बंधाईआ। पुरख अकाल करे बख्शीशी, रहमत नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

हाढ़ सतारां कहे तुसां **धर्म दी धार** खाधा प्रशादा, खाणा जगत वाला समझाईआ। एह वर दित्ता सी कृष्न नूं राधा, कृष्न हस्स के फिर राधा दी झोली पाईआ। कलिजुग माण रहणा नहीं सन्तन साधा, सच साधना विच्च नज़र कोई ना आईआ। उस वेले पूरा कौल करावांगा वाअदा, अभुल्ल भुल्ल विच्च कदे ना आईआ। तेरा लेखा मुकावांगा बकायदा, कायदगी धुर दी नाल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मन्दर इक्क सुहाईआ।

हाढ़ कहे जन भगतो मेरा तुहानूं सजदा, निउँ निउँ लागाँ पाईंआ । कलिजुग खेल वेखो कूड़ कुड़िआरी अग्ग दा, तत्तव तत्त रही जलाईआ । कपट विकार वेखो जग दा, दीन दुनी रोवे मारे धाहींआ। तुहानूं परम पुरख परमात्म आप सद्द दा, सद्दा नाम वाला जणाईआ। तुहाढ्ढा बंस हुण अग्गे जाणा वधदा, जगत जहान ना कोई अटकाईआ । तुहाढ्ढा प्यार तुहाढ्ढे विच्च सजदा, जो सज्जण नूर अलाहीआ। तुहाढ्ढा पन्ध मुकाया शाह रग दा, नौं दवारे डेरा ढाहीआ । तुसां शब्द राग सुनणा अनहद दा, अनरागी आप सुणाईआ। तुहानूं घर घर फिरे लभ्भदा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

हाढ़ सतारां कहे जन भगतो तुसां **सतिजुग दी धार** खाधा लंगर, कलिजुग रोवे मारे धाहीआ। जिस लेखा मुकाउणा ढोरां डंगर, पशूआं होए सहाईआ। उह मालक तुहाढ्ढे वड़ना अंदर, आपणा रंग रंगाईआ। बज़र कपाटी तोड़े जंदर, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। मनुआ मन ना दौड़े बन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। तुहानूं प्रकाश देवे बिनां सूर्या चन्दर, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। तुसां किसे दवारे नहीं जाणा मंगण, मांगत हो ना झोली डाहीआ। किरपा करे सूरा सरबंगण, सिर सिर आपणा हत्थ रखाईआ। सभ दी परवान करे बन्दन, हरिजन आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जन्म दे विछड़यां टुट्टी आया गंढुण, गंढु आपणा नाम पुआईआ।

(१७ हाढ़ शहनशाही सम्मत ८)

✪ ✪ ✪ ✪